

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya
B. Com Semester – VI (C-13) CBCS
Subject: Auditing & Corporate Governance

Topic: लेखापरीक्षा प्रक्रियाएँ

Ravindra Kumar, Associate Professor Department of Commerce

लेखापरीक्षा प्रक्रियाएँ:

ऑडिट प्रक्रियाएं वे तकनीकें, प्रक्रियाएं और तरीके हैं जिनका उपयोग ऑडिटर विश्वसनीय ऑडिट साक्ष्य प्राप्त करने के लिए करते हैं, जो उन्हें किसी संगठन की वित्तीय स्थिति के बारे में एक अच्छा निर्णय प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। किसी कंपनी का वित्तीय विवरण विश्वसनीय और तथ्यात्मक है या नहीं यह निर्धारित करने में सहायता के लिए ऑडिट प्रक्रियाएं आयोजित की जाती हैं। इन प्रक्रियाओं के नियमित कार्यान्वयन से किसी व्यवसाय की वित्तीय प्रतिष्ठा स्थापित करने और उसके ग्राहकों, बाज़ार और संभावित निवेशकों की नज़र में उसकी विश्वसनीयता को मजबूत करने में मदद मिलती है।

लेखापरीक्षा प्रक्रिया के तरीके

जब ऑडिटिंग की बात आती है तो कोई निश्चित संरचना नहीं होती है; इसकी पूरी प्रक्रिया ऑडिटर, ऑडिट की जाने वाली कंपनी और ऑडिट के उद्देश्य पर निर्भर करेगी। ऑडिट प्रक्रियाओं की दो मुख्य विधियाँ इस प्रकार हैं:

1. सारभूत लेखापरीक्षा प्रक्रियाएँ

मूल विधियाँ ऑडिट प्रक्रियाएँ हैं जो वित्तीय विवरण, खातों की किताबें, या लेनदेन रिकॉर्ड जैसे पेपर ट्रेल्स सहित वास्तविक भौतिक साक्ष्य प्रदान करती हैं। इसमें अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज भी शामिल हैं जैसे भूमि की रजिस्ट्री या भवन किराए के लिए विलेख/समझौता। अनिवार्य रूप से, वास्तविक तरीकों में कोई भी ठोस सबूत शामिल होता है जो न केवल परिस्थितियों की निर्णायक समझ प्रदान करता है, बल्कि उच्च स्तर की सटीकता भी रखता है।

2. विश्लेषणात्मक लेखापरीक्षा प्रक्रियाएँ

जबकि मूल विधि ऑडिट आधार के रूप में स्पष्ट प्रमाणों का उपयोग करती है, विश्लेषणात्मक विधियाँ इसे एक कदम आगे ले जाती हैं। विश्लेषणात्मक तरीके वित्तीय डेटा को गैर-वित्तीय डेटा के साथ जोड़ते हैं और उनके बीच संबंध निर्धारित करते हैं। पिछले रुझानों बनाम वर्तमान रुझानों की तुलना, साथ ही ग्राहक के रिकॉर्ड और वास्तविक साक्ष्य के बीच अंतर का मूल्यांकन भी विश्लेषणात्मक तरीकों पर विचार किया जाता है।

ऑडिट प्रक्रियाओं के प्रकार क्या हैं?

किसी कंपनी के लिए ऑडिट के नियोजन चरण के दौरान, संगठन के वातावरण को समझने के साथ-साथ इसकी कमजोरी को पहचानने और उपयोग करने के लिए ऑडिट प्रक्रियाओं के सर्वोत्तम सेट की पहचान करने के लिए जोखिम मूल्यांकन करना एक आवश्यकता है। यहां

आमतौर पर उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रकार की ऑडिट प्रक्रियाएं दी गई हैं, जिन्हें ऑडिटर चुन सकते हैं:

a. जाँच करना

सबसे सरल प्रकार की ऑडिट प्रक्रियाओं में से एक पूछताछ है। इस प्रक्रिया में लेखा परीक्षकों को संगठन के लोगों से औपचारिक या अनौपचारिक पूछताछ के माध्यम से मौखिक साक्ष्य एकत्र करना शामिल है। हालांकि प्रासंगिक, इस प्रकार के साक्ष्य अकेले खड़े होने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हैं और इन्हें वैध माने जाने के लिए अन्य सहायक दस्तावेजों या सबूतों की आवश्यकता होगी।

b. पुष्टीकरण

पूछताछ के समान, पुष्टीकरण भी किसी संगठन के लेनदेन के संबंध में स्पष्टीकरण मांगता है। हालांकि, मुख्य अंतर यह है कि ऑडिटर उन्हें किसी तीसरे पक्ष या अन्य बाहरी स्रोतों के साथ सीधे संचार के माध्यम से मान्य करेंगे जिनके साथ किसी संगठन का संबंध है। इन तृतीय पक्षों के उदाहरण बैंक, आपूर्तिकर्ता या ग्राहक हैं।

c. अवलोकन

इस प्रकार की ऑडिट प्रक्रिया के साथ, ऑडिटर आमतौर पर यह पुष्टि करने का प्रयास करते हैं कि मौजूदा व्यावसायिक प्रक्रियाएं या उपाय संगठन द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे हैं। इस प्रकार की प्रक्रिया से लेखा परीक्षकों को यह पता चलता है कि आंतरिक प्रक्रियाएं कैसे काम करती हैं, और क्या वे समग्र रूप से संगठन के संचालन को प्रभावित कर सकती हैं।

d. दस्तावेजों का निरीक्षण

दस्तावेजों का निरीक्षण रिकॉर्ड की गई जानकारी के माध्यम से लेनदेन को इकट्ठा करने और जांचने की प्रक्रिया है। इसे दो तरीकों-वाउचिंग और ट्रेसिंग का उपयोग करके निष्पादित किया जा सकता है।

वाउचिंग वह जगह है जहां ऑडिटर लेनदेन रिकॉर्ड को सत्यापित करने के लिए सहायक दस्तावेजों के विवरण को मैनुअल रूप से जांचते हैं। इस बीच, ट्रेसिंग स्रोत दस्तावेज़ से उनके कनेक्शन को ट्रैक करके लेनदेन को मान्य करने की प्रक्रिया है।

e. भौतिक या मूर्त संपत्ति का निरीक्षण

मूर्त संपत्तियों का निरीक्षण वह प्रक्रिया है जहां लेखा परीक्षक कंपनी की संपत्तियों की भौतिक जांच करते हैं जिनमें भूमि, भवन, वाहन, उपकरण या इन्वेंट्री जैसी संपत्तियां शामिल हैं। यह प्रक्रिया न केवल परिसंपत्ति के अस्तित्व की पुष्टि करती है, बल्कि यह निर्धारित करने में भी मदद करती है कि क्या इसमें दोष या हानि हुई है, जो इसके मूल्य को प्रभावित करती है।

ऑडिटर किसी कंपनी की सभी अचल संपत्तियों की सूची बना सकते हैं या निरीक्षण के लिए इस संपत्ति रजिस्टर चेकलिस्ट का उपयोग कर सकते हैं।

f. पुनर्गणना

यह ऑडिट प्रक्रिया काफी सीधी है। पुनर्गणना में, लेखा परीक्षक स्वयं लेनदेन की पुनर्गणना करते हैं और उनकी तुलना कंपनी के प्रारंभिक वित्तीय विवरण या गणना से करते हैं। ऑडिटर तब पहचान सकते हैं कि क्या वे संतुलित हैं, या आगे की जांच कर सकते हैं कि क्या कोई अंतर या विसंगतियां पाई गई हैं।

g. पुनः प्रदर्शन

रिपरफॉर्मेस का अर्थ केवल लेखापरीक्षकों द्वारा कंपनी द्वारा की गई लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं या आंतरिक नियंत्रणों को स्वतंत्र रूप से दोहराना है। इस प्रक्रिया का उपयोग करके प्राप्त ऑडिट साक्ष्य को अप्रत्यक्ष रूप से एकत्र किए गए साक्ष्य की तुलना में अधिक विश्वसनीय माना जाता है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष अनुभव और मूल्यांकन का प्रत्यक्ष रूप है।

ऑडिटर हमेशा कई प्रक्रियाओं का उपयोग करके अपना ऑडिट कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, केवल सहायक दस्तावेजों की जाँच करने के अलावा, वे भौतिक संपत्तियों का निरीक्षण भी कर सकते हैं या मौजूदा लेनदेन की पुष्टि के लिए अन्य संबंधित तीसरे पक्षों से पूछ सकते हैं। विभिन्न ऑडिट प्रक्रियाओं को निष्पादित करके, ऑडिटर ऑडिट परिणाम की विश्वसनीयता को मजबूत कर सकते हैं और गलत अनुमानों और विसंगतियों की संभावना को कम कर सकते हैं।

h. कौन सी ऑडिट प्रक्रिया सबसे विश्वसनीय है?

हालाँकि उपर्युक्त सभी प्रक्रियाओं के अपने-अपने लाभ हैं, उनमें से किसे सबसे विश्वसनीय माना जाता है?

क्रोन के इस लेख के अनुसार, भौतिक निरीक्षण, तीसरे पक्ष से पुष्टि, और रिकॉर्ड और दस्तावेजों का निरीक्षण तीन सबसे विश्वसनीय ऑडिट प्रक्रियाओं में से एक माना जाता है। अत्यधिक सटीक जानकारी प्रदान करने के अलावा, वे ऑडिट साक्ष्य द्वारा भी समर्थित हैं जिन्हें दोबारा जांचना और सत्यापित करना आसान है।

ये ऑडिट प्रक्रियाएं ऑडिटर्स को स्वतंत्र रूप से स्वयं जांच करने में सक्षम बनाती हैं और न केवल किसी कंपनी द्वारा दी गई जानकारी पर भरोसा करती हैं। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि ऑडिट परिणाम निष्पक्ष और यथासंभव सटीक हों।

चाहे जो भी ऑडिट प्रक्रियाएं और ऑडिटिंग उपकरण चुने जाएं, संगठनात्मक सहयोग और टीम वर्क को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण है कि किसी संगठन में हर कोई इस बात से अवगत हो कि यह ऊपर से नीचे तक कैसे काम करता है। मोबाइल लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम या एलएमएस जैसे सेफ्टी कल्चर (पूर्व में आईऑडिटर) के प्रशिक्षण के साथ, आप यह सुनिश्चित करने के लिए मोबाइल पाठ्यक्रम बना सकते हैं, परीक्षण कर सकते हैं और वितरित कर सकते हैं कि आपकी टीम लूप में हैं और प्रक्रिया सुधार में आपके मानकों का अनुपालन करती हैं।

Ravindra Kumar

Associate Professor

Department of Commerce